



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 06]

नई दिल्ली, बुधवार, जनवरी 7, 2015/पौष 17, 1936

No. 06]

NEW DELHI, WEDNESDAY, JANUARY 7, 2015/PAUSA 17, 1936

मंत्रिमंडल सचिवालय

संकल्प

नई दिल्ली, 1 जनवरी, 2015

सं. 511/2/1/2015-मंत्रि . - महात्मा गांधी ने कहा था "सतत विकास ही जीवन की विधि है और ऐसा व्यक्ति जो अनुकूल दिखाई पड़ने के लिए अपने धर्म सिद्धांत को बनाए रखने का प्रयत्न करता है सदैव स्वयं को भ्रामक स्थिति में धकेलता है"। नए भारत की इस भावना और परिवर्तित गतिशील शक्तियों को परिलक्षित करते हुए, शासन तथा नीतिगत संस्थाओं को नई चुनौतियों के अनुकूल होना है और भारत के संविधान के निर्माणकारी सिद्धांतों, हमारे सभ्यात्मक इतिहास तथा वर्तमान में सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ से प्राप्त ज्ञान की संपदा के आधार पर निर्मित होना चाहिए।

2. योजना आयोग की स्थापना 15 मार्च, 1950 को मंत्रिमंडल के संकल्प से की गई थी। लगभग 65 वर्ष के पश्चात्, देश एक अविकसित अर्थव्यवस्था से निकलकर विश्व की विशालतम अर्थव्यवस्थाओं वाले एक उदगामी भूमंडलीय राष्ट्र के रूप में परिवर्तित हो रहा है।

3. उत्तरजीविता की पूर्व-धारणा से ग्रस्त होने के कारण हमारी आकांक्षाएं बुलंद हो गई हैं और आज हम गरीबी उन्मूलन की मांग करते हैं न कि उसके उपशमन की। भारत के लोग अपनी भागीदारी के माध्यम से शासन में प्रगति और सुधार के लिए विशाल प्रत्याशाएं रखते हैं। उन्हें शासन और गत्यात्मक नीति परिवर्तनों में संस्थागत सुधारों की आवश्यकता है जो कि बड़े पैमाने पर परिवर्तन का बीज बो सकते हैं और उसका पालन पोषण कर सकते हैं। वास्तव में, उस समय से जब हमने स्वतंत्रता प्राप्त की थी, हमारे देश का "भाग्य" अब उच्चतर प्रक्षेपपथ पर है।

4. पिछले कुछ दशकों में हमने भारतीय राष्ट्रीयता का भी सुदृढीकरण होते हुए देखा है। भारत एक ऐसा विविधता वाला देश है जिसमें भाषाएं, विश्वास और सांस्कृतिक पारिस्थितिकीय प्रणालियां अलग-अलग हैं। इस विविधता ने भारतीय अनुभव की समग्रता को समृद्ध बनाया है। राजनैतिक रूप से भी, भारत ने ऐसे बहुलवाद के एक बड़े अध्येता को अंगीकार किया जिसने संघीय मतैक्य को नया रूप दिया है। संघ के राज्य, केन्द्रीय सरकार के मात्र उपांग होना नहीं चाहते हैं। वे आर्थिक प्रगति और विकास की रचना का अवधारण करने में निर्णायक भूमिका की वांछा करते हैं। प्रायः केन्द्रीय नियोजन में अन्तर्निहित सर्वसम्मत अनुमोदित दृष्टिकोण में अनावश्यक तनावों को उत्पन्न करने और राष्ट्रीय प्रयास के लिए आवश्यक समरसता को क्षीण करने की संभावना होती है। डा. अम्बेडकर ने दूर दृष्टि रखते हुए कहा था कि "जहां केन्द्रीय नियंत्रण और एकरूपता स्पष्ट रूप से आवश्यक नहीं है या अव्यवहार्य है, वहां शक्तियों को केन्द्रित करना अयुक्तियुक्त होगा"

5. परिवर्तनशील भारत की गतिशील शक्तियों के मध्य तक पहुंच में प्रौद्योगिकी क्रांति तथा सूचना तक पहुंच बढ़ाने तथा उससे सहभागी होने में निहित है। इस परिवर्तन के अनुक्रम में, उस समय जब कुछ परिवर्तनों का पूर्वानुमान लगाया जाता है और उनकी योजना बनाई जाती है तो उनमें से बहुत से बाजार की शक्तियों और बृहतर भूमंडलीय परिवर्तनों का परिणाम होते हैं। हमारी संस्थाओं और नीतियों में विकास और परिपक्वता में भी केन्द्रीयकृत योजनाओं के लिए घटती हुई भूमिका अंतर्निहित है जिससे स्वयं को पुनःपरिभाषित करने की आवश्यकता है।

6. भारत में परिवर्तन लाने वाली अनेक शक्तियां हैं और उनमें निम्नलिखित हैं-

(क) उद्योग और सेवा सेक्टरों का विकास हुआ है और अब वे वैश्विक स्तर पर कार्य कर रहे हैं। इस नींव पर निर्माण करने के लिए नये भारत को एक प्रशासनिक उदाहरण की जरूरत है, जिसमें सरकार 'समर्थकारक' हो न कि वह प्रथम का प्रदाता और अंतिम का आश्रय हो। औद्योगिक एवं सेवा सेक्टरों में एक 'खिलाड़ी' के रूप में सरकार की भूमिका को कम किया जाए। इसके स्थान पर, सरकार को समर्थकारी विधान बनाने, नीति निर्माण करने तथा विनियमन पर ध्यान संकेन्द्रित करना है।

(ख) कृषि में भारत की पारंपरिक सामर्थ्य हमारे कृषकों के प्रयासों तथा प्रौद्योगिकी में सुधारों के कारण कई गुणा बढ़ी है। हमें सुधार जारी रखने की आवश्यकता है और हम पूर्ण रूप से खाद्य सुरक्षा से आगे बढ़कर, कृषि उत्पादन के मिश्रण और कृषकों को जो उनकी उपज से मिलने वाले वास्तविक प्रत्यागमों पर ध्यान संकेन्द्रित करें।

(ग) आज हम, एक 'वैश्विक ग्राम' में निवास करते हैं, जो आधुनिक परिवहन, संचार और मीडिया तथा अंतर्राष्ट्रीय बाजारों और संस्थानों की आपसी नेटवर्किंग से जुड़ा है। जैसा कि भारत का वैश्विक प्रयासों में 'योगदान' है, इस पर हमारी सीमाओं से हटकर दूर घटने वाली घटनाओं का भी प्रभाव पड़ता है। वैश्विक अर्थव्यवस्थाएं और भौगोलिक राजनीति निरंतर एकीकृत हो रही हैं और निजी सेक्टर का इसके भीतर के एक घटक के रूप में महत्व बढ़ रहा है। भारत को समान विचार वाले वैश्विक मुद्दों, विशेष रूप से उन क्षेत्रों पर जिन पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया गया है, पर बहसों और विचार-विमर्शों में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

(घ) भारत के मध्यवर्गीय अपने आकार और क्रय शक्ति दोनों के संदर्भ में विशिष्ट हैं। यह शक्तिशाली समूह नव-मध्य वर्ग के प्रवेश के साथ बढ़ रहा है। यह विकास का महत्वपूर्ण प्रेरक रहा है और अपने उच्च शैक्षणिक स्तरों, गतिशीलता और देश में परिवर्तन लाने की इच्छा के कारण इसमें अपार संभावनाएं हैं। हमारी सतत चुनौती को यह सुनिश्चित करना है कि यह आर्थिक रूप से जीवंत समूह व्यवसाय में लगा रहता है और इसकी क्षमता का पूर्ण दोहन किया जाना है।

(ङ) उद्यमशीलता, वैज्ञानिक और बौद्धिक मानव पूंजी का भारत की सामर्थ्य शक्ति का एक स्रोत है, जो सफलता की अभूतपूर्व ऊंचाइयों को प्राप्त करने में हमारी सहायता करने के लिए उपलब्ध कराए जाने के लिए प्रतीक्षा कर रहा है। वास्तव में, 'सामाजिक पूंजी' जो हमारे लोगों में विद्यमान है, अभी तक देश के विकास में बड़ा योगदान करती रही है और इसलिए इसे समुचित नीतिगत पहलों के माध्यम से लाभ उठाए जाने की आवश्यकता है।

(च) अनिवासी भारतीय समुदाय, जो 200 से अधिक देशों में फैला हुआ है, जिनकी संख्या विश्व के कई देशों की जनसंख्या की तुलना में अधिक है। यह एक उल्लेखनीय भौगोलिक-आर्थिक और भौगोलिक-राजनीतिक सामर्थ्य है। भावी राष्ट्रीय नीतियों में इस सामर्थ्य को अवश्य समाविष्ट किया जाना चाहिए, जिससे कि उनके वित्तीय समर्थन से ठीक आगे नये भारत में उनकी भागीदारी को भी व्यापक बनाया जा सके। प्रौद्योगिकी और प्रबंधन विशेषज्ञता ऐसे स्वतः स्पष्ट क्षेत्र हैं, जहां यह समुदाय उल्लेखनीय रूप से योगदान दे सकता है।

(छ) शहरीकरण एक अपरिवर्तनीय प्रवृत्ति है। इस बुराई को मानने के स्थान पर, इसे विकास के लिए अपनी नीति का अंतरंग तत्व बनाना होगा। शहरीकरण को इससे प्राप्त होने वाले आर्थिक लाभों का फायदा उठाने के साथ-साथ एक संपूर्ण तथा सुरक्षित आवास स्थल का सृजन करने के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकी का प्रयोग करने के एक अवसर के रूप में समझा जाना चाहिए।

(ज) सुशासन के लिए अब पारदर्शिता अनिवार्य है। हम ऐसे डिजिटल युग में हैं जिसमें सामाजिक मीडिया जैसे साधन और रीतियां सरकार के विचारों और कार्यों को साझा और स्पष्ट करने में शक्तिशाली उपकरण हैं। इस प्रवृत्ति में समय के साथ वृद्धि होगी। सरकार और शासन को अपारदर्शिता और उसके द्वारा शासन में अनिष्ट की संभावना को कम करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करके पूर्ण पारदर्शिता का वातावरण बनाना होगा।

7. प्रौद्योगिकी और सूचना तक पहुंच ऐसी विविधता में एकता को, जो हमें परिभाषित करनी है, सुव्यक्त करती है। वे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को जोड़ने के लिए हमारे क्षेत्रों, राज्यों और पारिस्थितिकीय प्रणालियों की भिन्न-भिन्न क्षमताओं को जोड़ने में सहायक हैं। वास्तव में, इसके द्वारा भारतीय राष्ट्रीयता की भावना प्रबल हो रही है। ऐसी सृजनात्मक ऊर्जा का, जो भारतीय नानारूपेक्ष से प्रकट होती

है, परिणाम प्राप्त करने के लिए हमारे विकास माडल को और सहमतिजन्य और सहयोगी माडलों को समाविष्ट करना होगा। इसमें राज्यों, क्षेत्रों और परिक्षेत्रों की विशिष्ट मांगों को समाविष्ट करना होगा। राष्ट्रीय विकास को साझा दृष्टिकोण को मानवीय गरिमा, राष्ट्रीय आत्मसम्मान और समावेशित और महत्वपूर्ण विकास पद्धति के आधार पर तैयार किया जाना चाहिए।

8. एक देश के रूप में हम जिन चुनौतियों का सामना कर रहे हैं वे भी जटिल हो गई हैं:

(क) अगले कुछ दशकों के दौरान भारत की जनांकिकीय विभाजित विशाल आबादी का सार्थक रूप से लाभ उठाना होगा। हमारे युवाओं, पुरुषों और महिलाओं की क्षमता को शिक्षा, कौशल विकास, लिंग भेद समाप्ति और रोजगार के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी और ज्ञानपूर्ण अर्थव्यवस्था के मोर्चों पर कार्य करने के लिए हमें अपने युवाओं को उत्पादक अवसर उपलब्ध कराने के लिए प्रयास करना है।

(ख) गरीबी उन्मूलन अत्यधिक महत्वपूर्ण है जिसके द्वारा हमें अकेले एक राष्ट्र के रूप में अपनी सफलता को मापना चाहिए। प्रत्येक भारतीय को आवश्यक रूप से प्रतिष्ठापूर्ण और आत्मसम्मान से जीवन जीने का अवसर दिया जाना चाहिए। साधु कवि तिरुवल्लुवर ने लिखा है कि "गरीबी से अधिक भयानक और दुःखदायी कुछ भी नहीं है" और "गरीबी का दंश व्यक्ति की श्रेष्ठता में से उसकी उत्कृष्ट कुलीनता छीन लेता है"। ये शब्द आज भी उतने ही सत्य हैं जितने तब थे जब वे दो हजार वर्ष से और पहले लिखे गए थे।

(ग) आर्थिक विकास तब तक अधूरा है जब तक वह प्रत्येक व्यक्ति को विकास के लाभ का आनंद उठाने के लिए अधिकार उपलब्ध नहीं कराता। पंडित दीन दयाल उपाध्याय ने ऐसा अंत्योदय या पददलित सेवा की अपनी अवधारणा में उल्लेख किया है जहां यह सुनिश्चित करने का लक्ष्य है कि गरीब से गरीब व्यक्ति को भी विकास का लाभ प्राप्त हो। लिंग भेदभाव पर आधारित असमानता के साथ-साथ आर्थिक विषमता की ओर विशेष ध्यान देना है। हमें ऐसा वातावरण और सहायता प्रणाली स्थापित करने की जरूरत है जिसमें महिलाओं को राष्ट्र निर्माण में अपनी अधिकारपूर्ण भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहन मिले। अवसरों की समानता समावेशी एजेंडे के साथ हर व्यक्ति को उपलब्ध हो। पूर्व निर्धारित मार्ग पर हर व्यक्ति को धकेलने के बजाय हमें समाज के हर तत्व को, विशेष रूप से अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों जैसे कमजोर वर्गों को, राष्ट्रीय एजेंडा तैयार करने में देश और सरकार के विकल्पों को प्रभावित करने की योग्यता देनी है। वास्तव में योगदान के लिए समाज के हर सदस्य की योग्यता में मूलभूत विश्वास को समाविष्ट किया जाना है। शंकरदेव ने सदियों पहले कीर्तन घोष में लिखा है, "प्रत्येक प्राणी को अपनी आत्मा के बराबर देखना मोक्ष प्राप्ति का सबसे बड़ा साधन है"।

(घ) ग्राम हमारे लोकाचार, संस्कृति और जीविका के सुदृढ़ आधार बने हुए हैं। इन्हें विकास प्रक्रिया में पूर्णरूप से संस्थागत बनाये जाने की आवश्यकता है ताकि हम उनके उत्साह और ऊर्जा का लाभ उठा सकें।

(ङ) भारत में 50 करोड़ से अधिक छोटे कारबार हैं जो रोजगार जुटाने के मुख्य स्रोत हैं। ये कारबार समाज के पिछड़े और वंचित वर्गों के लिए अवसर जुटाने के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। नीति बनाने में कौशल, ज्ञान उन्नयन और वित्तीय पूंजी और संबंधित प्रौद्योगिकी तत्व तक पहुंच बनाने के रूप में इसे क्षेत्र को आवश्यक सहायता प्रदान करने पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

(च) विकास के अच्छे वातावरण में ही उत्तरदायी विकास होता है। भारत विशाल विविध देशों में से एक है। हमारी पर्यावरण और पारिस्थितिकीय आस्तियां शाश्वत हैं और इन्हें आवश्यक रूप से संरक्षित और सुरक्षित किया जाना चाहिए। देश के पर्यावरण को आदर प्रदान करने की विरासत वृक्षों और पशुओं के प्रति हमारी श्रद्धा से परिलक्षित होती है। भावी पीढ़ियों के लिए हमारी विरासत सतत् प्रगति की होनी चाहिए। हमारे पर्यावरण और संसाधनों के प्रत्येक तत्व जैसे जल, जमीन और जंगल की सुरक्षा की जानी चाहिए; और यह कार्य इस तरह करना होगा जिसमें जलवायु और जन के साथ उनके अंतर्संबंधों को सम्मिलित किया जाए। हमारे विकास की कार्यसूची में यह सुनिश्चित होना चाहिए कि विकास वर्तमान और भावी पीढ़ियों के जीवन की गुणवत्ता को दूषित न करे।

9. राष्ट्रीय उद्देश्यों को प्राप्त करने में सरकार की भूमिका समय के साथ बदल सकती है किंतु वह सदैव महत्वपूर्ण रहेगी। सरकार ऐसी नीतियां बनाती रहेगी जो देश की आकांक्षाओं और आवश्यकताओं को प्रतिबिंबित करती हों और उन्हें सही रीति से निष्पादित करे कि वह नागरिकों के लिए लाभप्रद हो। विश्व के साथ राजनीतिक और आर्थिक रूप से एकीकृत करने के लिए नीति बनाने के साथ-साथ सरकार के कार्यकरण को भी समाहित करना होगा।

संक्षेप में, भारत में प्रभावी शासन निम्नलिखित स्तंभों पर आधारित होगा, अर्थात्:-

- (क) जन अनुकूल कार्यक्रम जो समाज के साथ-साथ व्यक्ति की भी आकांक्षा पूरी करता हो;
- (ख) जनता की आवश्यकताओं का अनुमान लगाने और उन्हें पूरा करने में अत्यधिक सक्रियता;
- (ग) नागरिकों को सम्मिलित करके उनकी भागीदारी;
- (घ) सभी पहलुओं में महिलाओं का सशक्तीकरण;

(ड) विशेष रूप से आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों अर्थात् गरीबों, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़े वर्ग के समुदायों, ग्रामीण क्षेत्र और किसानों (गांव और किसान) और युवा और अल्पसंख्यक समुदाय के सभी वर्गों पर विशेष ध्यान देने के साथ सभी समूहों का समावेशन;

(च) अपने देश के युवाओं के लिए अवसर की समानता; और

(छ) सरकार को प्रत्यक्ष तथा जिम्मेदार बनाने के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग के माध्यम से पारदर्शिता ।

10. सरकारी और निजी क्षेत्रों में शासन, समाज के साथ-साथ समग्र रूप से महत्वपूर्ण है। सुशासन और सेवाओं के प्रभावी परिदान को सुनिश्चित करने में प्रत्येक नागरिक की भागीदारी होनी चाहिए। जन पहल के लिए जनचेतना बहुत महत्वपूर्ण है। अतीत में हो सकता है कि शासन जनता के शासन के प्रति संकीर्ण रवैया अपनाता रहा हो। आज गतिशील शक्तियां 'जनसेवाएं' निजी अस्तित्व उपलब्ध करा रही हैं और 'नागरिकों की भागीदारी' के लिए व्यापक संभावना है अतः शासन हर किसी के इर्द-गिर्द केंद्रित है और प्रत्येक नागरिक को अंतर्बलित करता है।

11. बीते वर्षों के साथ सरकार का संस्थागत ढांचा विकसित और परिपक्व हुआ है। इससे क्षेत्र में विशेषज्ञता विकसित हुई है जिसने संस्थाओं को सौंपे गए कार्यों की विशिष्टता बढ़ाई है। योजना की प्रक्रिया के संदर्भ में शासन की 'प्रक्रिया' को शासन की 'कार्यनीति' से अलग करने साथ ही साथ उसे ऊर्जावान बनाने की आवश्यकता है।

शासन संरचनाओं के संदर्भ में, हमारे देश की परिवर्तित अपेक्षाओं के कारण एक ऐसे संस्थान की स्थापना की आवश्यकता है जो निदेशात्मक और नीति डायनिमों सरकार के थिंक टैंक के रूप में कार्य करे। प्रस्तावित संस्था को केंद्रीय और राज्य स्तर पर नीति के प्रमुख तत्वों के सुसंगत रणनीतिक और तकनीकी सलाह प्रदान करनी है। इसके अंतर्गत आर्थिक मोर्चे पर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय आयात के मामले, देश के भीतर के साथ-साथ अन्य राष्ट्रों में उपलब्ध सर्वोत्तम पद्धतियों के प्रसार, नए नीतिगत विचारों को अपनाने तथा विनिर्दिष्ट मुद्दा आधारित प्रोत्साहन है। इस संस्था को परिवर्तनशील और अधिक एकीकृत विश्व, जिसका भारत एक भाग है, के लिए प्रतिक्रिया करने में समर्थ होगी।

विकासवादी केंद्र से राज्यों की तरफ चलने वाले एक पक्षीय नीतिगत क्रम को एक महत्वपूर्ण विकासवादी परिवर्तन के रूप में राज्यों की वास्तविक और सतत् भागीदारी से परिवर्तित किया जाएगा। त्वरित गति से कार्य करने के लिए सरकार को रणनीतिक नीति दृष्टिकोण उपलब्ध कराने के साथ साथ प्रासंगिक मुद्दों से निपटने के लिए इस संस्थान के पास आवश्यक संसाधन, ज्ञान, कौशल और क्षमता होनी चाहिए।

सबसे महत्वपूर्ण यह है कि विश्व के सकारात्मक प्रभावों को अपनाते हुए संस्थान को इस नीति का पालन करना होगा कि भारत के परिप्रेक्ष्य में एक ही मॉडल प्रत्यारोपित नहीं किया जा सकता है। विकास के लिए हमें अपनी रणनीति स्वयं निर्धारित करनी होगी। देश में और देश के लिए क्या हितकारी है, संस्थान को इस पर ध्यान केंद्रित करना होगा। यह विकास के लिए भारतीय दृष्टिकोण पर आधारित होगा।

12. इन आकांक्षाओं को जीवंत बनाने के लिए - नीति आयोग (राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्था) संस्था है। नीति आयोग को राज्य सरकारों, विषय विशेषज्ञ और सुसंगत संस्थाओं सहित संपूर्ण पणधारियों के बीच गहन विचार विमर्श के बाद प्रस्तावित किया गया है। नीति आयोग निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए कार्य करेगा :-

क. राष्ट्रीय उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए राज्यों की सक्रिय भागीदारी के साथ राष्ट्रीय विकास प्राथमिकताओं, क्षेत्रों और रणनीतियों का एक साझा दृष्टिकोण विकसित करना। तब नीति आयोग का दर्शन बल प्रदान करने के लिए प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्रियों को प्रोत्साहन देने के लिए 'राष्ट्रीय एजेंडा' का ढांचा उपलब्ध कराएगा

ख. सशक्त राज्य ही सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं, इसको स्वीकार करते हुए राज्यों के साथ सतत् आधार पर संरचनात्मक सहयोग की पहल और तंत्रों के माध्यम से सहयोगपूर्ण संघवाद को बढ़ावा देना

ग. ग्राम स्तर पर विश्वसनीय योजनाएं तैयार करने के लिए तंत्र विकसित करना और इन सभी को उत्तरोत्तर रूप से सरकार के उच्चतर स्तर तक पहुंचाना

घ. जो क्षेत्र विशेष रूप से आयोग को निर्दिष्ट किए गए हैं उनकी आर्थिक रणनीति और नीति में राष्ट्रीय सुरक्षा के हितों को सम्मिलित करने को सुनिश्चित करना

ड. हमारे समाज के उन वर्गों पर विशेष रूप से ध्यान देना जिन तक आर्थिक प्रगति से उचित प्रकार से लाभांशित ना हो पाने का जोखिम हो

च. रणनीतिक और दीर्घावधि के लिए नीति तथा कार्यक्रम का ढांचा तैयार करना और पहल करना तथा उनकी प्रगति और क्षमता को मॉनीटर करना। निगरानी और प्रतिक्रिया के आधार पर नवीन सुधार में उपयोग किए जाएंगे जिसके अंतर्गत मध्यावधि संशोधन भी हैं

- छ. महत्वपूर्ण पणधारियों तथा समान विचारधारा वाले राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय थिंक टैंक और साथ ही साथ शैक्षिक और नीति अनुसंधान संस्थाओं के बीच परामर्श और भागीदारी को प्रोत्साहन देना
- ज. राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों, वृत्तिकों तथा अन्य भागीदारों के सहयोगात्मक समुदाय के माध्यम से ज्ञान, नवाचार, उद्यमशीलता सहायक प्रणाली बनाना
- झ. विकास के एजेंडे के कार्यान्वयन में तेजी लाने के क्रम में अंतर-क्षेत्रीय और अंतर-विभागीय मुद्दों के समाधान के लिए एक मंच प्रदान करना
- ञ. अत्याधुनिक संसाधन केंद्र बनाना जो सुशासन तथा सतत् और न्यायसंगत विकास की सर्वश्रेष्ठ कार्यप्रणाली पर अनुसंधान करने के साथ-साथ पणधारियों तक पहुंचाने में भी मदद करे
- ट. आवश्यक संसाधनों की पहचान करने सहित कार्यक्रमों और उपायों के कार्यान्वयन का सक्रिय मूल्यांकन और सक्रिय निगरानी करना, ताकि सेवाएं प्रदान करने में सफलता की संभावनाओं को प्रबल बनाया जा सके
- ठ. कार्यक्रमों और नीतियों के क्रियान्वयन के लिए प्रौद्योगिकी उन्नयन और क्षमता निर्माण पर जोर
- ड. राष्ट्रीय विकास के एजेंडा और उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अन्य आवश्यक गतिविधियों का उत्तरदायित्व लेना

13. नीति आयोग का गठन निम्न प्रकार होगा:--

- (क) भारत के प्रधान मंत्री- अध्यक्ष
- (ख) शासी परिषद् में सभी राज्यों के मुख्य मंत्री और संघ राज्यक्षेत्रों के उपराज्यपाल शामिल होंगे
- (ग) विशिष्ट मुद्दों और ऐसे आकस्मिक मामले, जिनका संबंध एक से अधिक राज्य या क्षेत्र से हो, को देखने के लिए क्षेत्रीय परिषदें गठित की जाएंगी। ये परिषदें विशिष्ट कार्यकाल के लिए बनाई जाएंगी। भारत के प्रधान मंत्री के निर्देश पर क्षेत्रीय परिषदों की बैठक होगी और इनमें संबंधित क्षेत्र के राज्यों के मुख्य मंत्री और संघ राज्यक्षेत्रों के उपराज्यपाल शामिल होंगे। इनकी अध्यक्षता नीति आयोग के अध्यक्ष या उनके नामनिर्देशित करेंगे
- (घ) संबंधित कार्य क्षेत्र की जानकारी रखने वाले दक्ष, विशेषज्ञ और कार्यरत व्यक्ति, विशेष आमंत्रित के रूप में प्रधान मंत्री द्वारा नामित किए जाएंगे
- (ङ) पूर्णकालिक संगठनात्मक ढांचे में प्रधानमंत्री के अध्यक्ष होने के अलावा निम्न होंगे:
- (i) उपाध्यक्ष: प्रधान मंत्री द्वारा नियुक्त
- (ii) सदस्य: पूर्णकालिक
- (iii) अंशकालिक सदस्य: अग्रणी विश्वविद्यालय, शोध संस्थानों और अन्य सुसंगत संस्थाओं से अधिकतम दो पदेन सदस्य; अंशकालिक सदस्य बारी के आधार पर होंगे
- (iv) पदेन सदस्य: केन्द्रीय मंत्रिपरिषद से अधिकतम चार सदस्य प्रधान मंत्री द्वारा नामित होंगे
- (v) मुख्य कार्यकारी अधिकारी: भारत सरकार के सचिव स्तर के अधिकारी को निश्चित कार्यकाल के लिए प्रधान मंत्री द्वारा नियुक्त किया जाएगा
- (vi) सचिवालय, जैसा आवश्यक समझा जाए

14. स्वामी विवेकानंद ने कहा, "एक विचार लें। उस एक विचार को अपना जीवन बनाएं- उसी के बारे में सोचें, उसका सपना देखें और उसी विचार को जीवन का आधार बनाएं। मस्तिष्क, मांसपेशी, स्नायुतंत्र, अपने शरीर के प्रत्येक भाग को उस विचार से ओतप्रोत कर दें और दूसरे विचारों को अलग रख दें। यही सफलता का मार्ग है।" सहकारी संघवाद के प्रति अपनी प्रतिबद्धता, नागरिकों की भागीदारी को बढ़ावा देने, अवसरों तक समतावादी पहुंच, प्रतिभागी और अनुकूलनीय शासन और विकसित हो रही प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रयोग के जरिए नीति आयोग विकास प्रक्रिया को महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश और रणनीतिक योगदान देगा। विकास के लिए विचारों का उद्भवकारी होने के साथ, यह नीति आयोग का मुख्य मिशन होगा।

15. यह संकल्प 1 जनवरी, 2015 से प्रवृत्त होगा और प्रवृत्त हुआ समझा जाएगा तथा संकल्प सं0 1-पी(सी)/50 तारीख 15 मार्च, 1950 उक्त तारीख से अधिकांत हो जाएगा।

संयुक्ता राय, निदेशक

CABINET SECRETARIAT**RESOLUTION**

New Delhi, the 1st January, 2015

No. 511/2/1/2015-Cab.—Mahatma Gandhi had said: “Constant development is the law of life, and a man who always tries to maintain his dogmas in order to appear consistent drives himself into a false position”. Reflecting this spirit and the changed dynamics of the new India, the institutions of governance and policy have to adapt to new challenges and must be built on the founding principles of the Constitution of India, the wealth of knowledge from our civilizational history and the present day socio-cultural context.

2. The Planning Commission was set up on the 15th of March, 1950 through a Cabinet Resolution. Nearly 65 years later, the country has metamorphosed from an under-developed economy to an emergent global nation with one of the world’s largest economies.

3. From being preoccupied with survival, our aspirations have soared and today we seek elimination, rather than alleviation, of poverty. The people of India have great expectations for progress and improvement in governance, through their participation. They require institutional reforms in governance and dynamic policy shifts that can seed and nurture large-scale change. Indeed, the ‘destiny’ of our country, from the time we achieved Independence, is now on a higher trajectory.

4. The past few decades have also witnessed a strengthening of Indian nationhood. India is a diverse country with distinct languages, faiths and cultural ecosystems. This diversity has enriched the totality of the Indian experience. Politically too, India has embraced a greater measure of pluralism which has reshaped the federal consensus. The States of the Union do not want to be mere appendages of the Centre. They seek a decisive say in determining the architecture of economic growth and development. The one-size-fits-all approach, often inherent in central planning, has the potential of creating needless tensions and undermining the harmony needed for national effort. Dr. Ambedkar had said with foresight that it is “unreasonable to centralise powers where central control and uniformity is not clearly essential or is impracticable”.

5. At the heart of the dynamics of transforming India lies a technology revolution and increased access to and sharing of information. In the course of this transformation, while some changes are anticipated and planned, many are a consequence of market forces and larger global shifts. The evolution and maturing of our institutions and polity also entail a diminished role for centralised planning, which itself needs to be redefined.

6. The forces transforming India are many and include:

a. The industry and service sectors have developed and are operating on a global scale now. To build on this foundation, new India needs an administration paradigm in which the government is an “enabler” rather than a “provider of first and last resort”. The role of the government as a “player” in the industrial and service sectors has to be reduced. Instead, government has to focus on enabling legislation, policy making and regulation.

b. India’s traditional strength in agriculture has increased manifold on account of the efforts of our farmers and improvements in technology. We need to continue to improve, and move from pure food security to a focus on a mix of agricultural production as well as the actual returns that farmers get from their produce.

c. Today, we reside in a ‘global village’, connected by modern transport, communications and media, and networked international markets and institutions. As India ‘contributes’ to global endeavours, it is also influenced by happenings far removed from our borders. Global economics and geo-politics are getting increasingly integrated, and the private sector is growing in importance as a constituent within that. India needs to be an active player in the debates and deliberations on the global commons, especially in relatively uncharted areas.

d. India’s middle class is unique in terms of its size and purchasing power. This formidable group is increasing with the entry of the neo-middle class. It has been an important driver of growth and has enormous potential on account of its high education levels, mobility and willingness to push for change in the country. Our continuing challenge is to ensure that this economically vibrant group remains engaged and its potential is fully realised.

e. India’s pool of entrepreneurial, scientific and intellectual human capital is a source of strength waiting to be unleashed to help us attain unprecedented heights of success. In fact, the ‘social capital’ that is present in our people has been a major contributor to the development of the country thus far and, therefore, it needs to be leveraged through appropriate policy initiatives.

f. The Non-Resident Indian community, which is spread across more than 200 countries, is larger in number than the population of many countries of the world. This is a significant geo-economic and geo-political strength. Future national policies must incorporate this strength in order to broaden their participation in the new India beyond just their financial support. Technology and management expertise are self-evident areas where this community can contribute significantly.

g. Urbanisation is an irreversible trend. Rather than viewing it as an evil, we have to make it an integral part of our policy for development. Urbanisation has to be viewed as an opportunity to use modern technology to create a wholesome and secure habitat while reaping the economic benefits that it offers.

h. Transparency is now a sine qua non for good governance. We are in a digital age where the tools and modes of communication, like social media, are powerful instruments to share and explain the thoughts and actions of the government. This trend will only increase with time. Government and governance have to be conducted in an environment of total transparency – using technology to reduce opacity and thereby, the potential for misadventures in governing.

7. Technology and information access have accentuated the unity in diversity that defines us. They have helped integrate different capabilities of our regions, states and eco-systems towards an interlinked national economy. Indeed, Indian nationhood has been greatly strengthened on their account. To reap the benefits of the creative energy that emerges from the Indian kaleidoscope, our development model has to become more consensual and co-operative. It must embrace the specific demands of states, regions and localities. A shared vision of national development has to be worked out based on human dignity, national self-respect and an inclusive and sustainable development path.

8. The challenges we face as a country have also become more complex:

a. India's demographic dividend has to be leveraged fruitfully over the next few decades. The potential of our youth, men and women, has to be realized through education, skill development, elimination of gender bias, and employment. We have to strive to provide our youth productive opportunities to work on the frontiers of science, technology and knowledge economy.

b. Poverty elimination remains one of the most important metrics by which alone we should measure our success as a nation. Every Indian must be given an opportunity to live a life of dignity and self respect. The words of Tiruvalluvar, the sage-poet, when he wrote that “nothing is more dreadfully painful than poverty”, and “gripping poverty robs a man of the lofty nobility of his descent”, are as true today as they were when written more than two thousand years ago.

c. Economic development is incomplete if it does not provide every individual the right to enjoy the fruits of development. Pt. Deen Dayal Upadhyaya had enunciated this in his concept of Antyodaya, or uplift of the downtrodden, where the goal is to ensure that the poorest of the poor get the benefits of development. Inequalities based on gender biases as well as economic disparities have to be redressed. We need to create an environment and support system that encourages women to play their rightful role in nation-building. Equality of opportunity goes hand in hand with an inclusiveness agenda. Rather than pushing everyone on to a pre-determined path, we have to give every element of society – especially weaker segments like the Scheduled Castes and Scheduled Tribes - the ability to influence the choices the country and government make in setting the national agenda. In fact, inclusion has to be predicated on a belief in the ability of each member of society to contribute. As Sankar Dev wrote centuries ago in the Kirtan Ghosh: “To see every being as equivalent to one's own soul is the supreme means (of attaining deliverance)”.

d. Villages (Gram) continue to be the bedrock of our ethos, culture and sustenance. They need to be fully integrated institutionally into the development process so that we draw on their vitality and energy.

e. India has more than 50 million small businesses, which are a major source of employment creation. These businesses are particularly important in creating opportunities for the backward and disadvantaged sections of the society. Policy making must focus on providing necessary support to this sector in terms of skill and knowledge upgrades and access to financial capital and relevant technology.

f. Responsible development implies environmentally sound development. India is one of the mega-diverse countries. Our environmental and ecological assets are eternal, and must be preserved and safeguarded. The country's legacy of respect for environment is reflected in our reverence for trees and animals. Our legacy to future generations must be sustainable progress. Each element of our environment (pariyavaran) and resources, namely water, land and forest (Jal, Jameen evam Jungle) must be protected; and this must be done in a manner that takes into account their inter-linkages with climate (jal vayu) and people (jan). Our development agenda has to ensure that development does not sully the quality of life of the present and future generations.

9. The role of the government in achieving 'national objectives' may change with time, but will always remain significant. Government will continue to set policies that anticipate and reflect the country's requirements and execute them in a just manner for the benefit of the citizens. The continuing integration with the world – politically and economically - has to be incorporated into policy making as well as functioning of the government.

In essence, effective governance in India will rest on the following pillars:

- a. Pro-people agenda that fulfils the aspirations of the society as well as individual,
- b. Pro-active in anticipating and responding to their needs,

- c. Participative, by involvement of citizens,
- d. Empowering women in all aspects
- e. Inclusion of all groups, with special attention to the economically weak (garib), the SC, ST and OBC communities, the rural sector and farmers (gaon and kisan), youth and all categories of minorities.
- f. Equality of opportunity to our country's youth,
- g. Transparency through the use of technology to make government visible and responsive.

10. Governance, across the public and private domains, is the concern of society as a whole. Everyone has a stake in ensuring good governance and effective delivery of services. Creating Jan Chetna, therefore, becomes crucial for people's initiative. In the past, governance may have been rather narrowly construed as public governance. In today's changed dynamics – with 'public' services often being delivered by 'private' entities, and the greater scope for 'participative citizenry', governance encompasses and involves everyone.

11. The institutional framework of government has developed and matured over the years. This has allowed the development of domain expertise which allows us the chance to increase the specificity of functions given to institutions. Specific to the planning process, there is a need to separate as well as energize the distinct 'process' of governance from the 'strategy' of governance.

In the context of governance structures, the changed requirements of our country, point to the need for setting up an institution that serves as a Think Tank of the government – a directional and policy dynamo. The proposed institution has to provide governments at the central and state levels with relevant strategic and technical advice across the spectrum of key elements of policy. This includes matters of national and international import on the economic front, dissemination of best practices from within the country as well as from other nations, the infusion of new policy ideas and specific issue-based support. The institution has to be able to respond to the changing and more integrated world that India is part of.

An important evolutionary change from the past will be replacing a centre-to-state one-way flow of policy by a genuine and continuing partnership with the states. The institution must have the necessary resources, knowledge, skills and, ability to act with speed to provide the strategic policy vision for the government as well as deal with contingent issues.

Perhaps most importantly, the institution must adhere to the tenet that while incorporating positive influences from the world, no single model can be transplanted from outside into the Indian scenario. We need to find our own strategy for growth. The new institution has to zero in on what will work in and for India. It will be a Bharatiya approach to development.

12. The institution to give life to these aspirations is the NITI Aayog (National Institution for Transforming India). This is being proposed after extensive consultation across the spectrum of stakeholders including inter alia state governments, domain experts and relevant institutions. The NITI Aayog will work towards the following objectives:

- a. To evolve a shared vision of national development priorities, sectors and strategies with the active involvement of States in the light of national objectives. The vision of the NITI Aayog will then provide a framework 'national agenda' for the Prime Minister and the Chief Ministers to provide impetus to
- b. To foster cooperative federalism through structured support initiatives and mechanisms with the States on a continuous basis, recognizing that strong States make a strong nation
- c. To develop mechanisms to formulate credible plans at the village level and aggregate these progressively at higher levels of government
- d. To ensure, on areas that are specifically referred to it, that the interests of national security are incorporated in economic strategy and policy
- e. To pay special attention to the sections of our society that may be at risk of not benefitting adequately from economic progress
- f. To design strategic and long term policy and programme frameworks and initiatives, and monitor their progress and their efficacy. The lessons learnt through monitoring and feedback will be used for making innovative improvements, including necessary mid-course corrections
- g. To provide advice and encourage partnerships between key stakeholders and national and international like-minded Think Tanks, as well as educational and policy research institutions
- h. To create a knowledge, innovation and entrepreneurial support system through a collaborative community of national and international experts, practitioners and other partners
- i. To offer a platform for resolution of inter-sectoral and inter-departmental issues in order to accelerate the implementation of the development agenda

- j. To maintain a state-of-the-art Resource Centre, be a repository of research on good governance and best practices in sustainable and equitable development as well as help their dissemination to stake-holders
- k. To actively monitor and evaluate the implementation of programmes and initiatives, including the identification of the needed resources so as to strengthen the probability of success and scope of delivery
- l. To focus on technology upgradation and capacity building for implementation of programmes and initiatives
- m. To undertake other activities as may be necessary in order to further the execution of the national development agenda, and the objectives mentioned above
13. The NITI Aayog will comprise the following:
- a. Prime Minister of India as the Chairperson
 - b. Governing Council comprising the Chief Ministers of all the States and Lt. Governors of Union Territories
 - c. Regional Councils will be formed to address specific issues and contingencies impacting more than one state or a region. These will be formed for a specified tenure. The Regional Councils will be convened by the Prime Minister and will comprise of the Chief Ministers of States and Lt. Governors of Union Territories in the region. These will be chaired by the Chairperson of the NITI Aayog or his nominee
 - d. Experts, specialists and practitioners with relevant domain knowledge as special invitees nominated by the Prime Minister
 - e. The full-time organizational framework will comprise of, in addition to the Prime Minister as the Chairperson:
 - i. Vice-Chairperson: To be appointed by the Prime Minister
 - ii. Members: Full-time
 - iii. Part-time members: Maximum of 2 from leading universities research organizations and other relevant institutions in an ex-officio capacity. Part time members will be on a rotational basis
 - iv. Ex Officio members: Maximum of 4 members of the Union Council of Ministers to be nominated by the Prime Minister
 - v. Chief Executive Officer: To be appointed by the Prime Minister for a fixed tenure, in the rank of Secretary to the Government of India
 - vi. Secretariat as deemed necessary
14. Swami Vivekananda said “Take up one idea. Make that one idea your life – think it, dream of it, live on that idea. Let the brain, muscles, nerves, every part of your body, be full of that idea and just leave every other idea alone. This is the way to success.” Through its commitment to a cooperative federalism, promotion of citizen engagement, egalitarian access to opportunity, participative and adaptive governance and increasing use of technology, the NITI Aayog will seek to provide a critical directional and strategic input into the development process. This, along with being the incubator of ideas for development, will be the core mission of NITI Aayog.
15. This Resolution shall come into force and shall be deemed to have come into force with effect from the 1st day of January, 2015 and Resolution No. 1-P(C)/50 dated the 15th March 1950, shall stand superseded with effect from the date of coming into force of this Resolution.

SANJUKTA RAY, Director